PHILOSOPHY

Hons., Paper-III (Part II)

Hedonism (सुखवाद)

- Dr. S.K. Singh
Mob.-9431449951

→ सुखवाद के अनुसार सुख प्राप्त करना ही जीवन का अन्तिम उद्देश्य है। इसलिये वैसे कर्म, जो सुख प्राप्ति के साधन हैं वे शुभ (Good) और वे जिनमें इस लक्ष्य की सिद्धि नहीं होती, अशुभ (Evil) हैं।

→ सुखवाद मनुष्य की भावना ~~को ही~~ (Sensibility) को ही प्रधान मानता है। मानव-स्वभाव में दो तत्त्व हैं- भावना और बुद्धि। सुखवाद ~~मनुष्य~~ भावना प्रसूत क्रिया को ही मनुष्य की सबसे उत्कृष्ट क्रिया मानते हैं। बुद्धि केवल भावनाओं को तुष्ट करने का साधन है। यदि उससे हमारी भावना या इच्छा की तृप्ति होती है, तो वह शुभ है।

→ सुखवाद के भी भिन्न रूप हैं। सर्वप्रथम इसके दो रूप हैं- मनोवैज्ञानिक सुखवाद तथा नैतिक सुखवाद। मनोवैज्ञानिक सुखवाद के अनुसार 'सुख की प्राप्ति ही वस्तुतः प्रत्येक मनुष्य के जीवन का लक्ष्य होता है' जबकि नैतिक सुखवाद के अनुसार 'सुख की प्राप्ति ही मानव जीवन का लक्ष्य होना चाहिये'। मनोवैज्ञानिक सुखवाद तथ्यात्मक रूप से ~~सुख~~ मानव कर्मों की परीक्षा कर सुख की व्याख्या करता है जबकि नैतिक सुखवाद मूल्यात्मक रूप से सुख को महत्त्व देता है। इसलिए पहला ~~का~~ आचारशास्त्र ~~से~~ ~~कोई संबंध~~ का विषय-वस्तु नहीं है जबकि दूसरा है।

→ पुनः नैतिक सुखवाद के भी दो रूप हैं- स्वार्थमूलक सुखवाद (Egoistic Hedonism) तथा परार्थमूलक सुखवाद (Altruistic or Universalistic Hedonism)। ~~स्वार्थमूलक सुखवाद के अनुसार~~ परार्थमूलक सुखवाद को कुछ चिन्तकों ने उपयोगितावाद (Utilitarianism) भी कहा है।

→ दूसरे दृष्टिकोण से भी ~~सुखवाद~~ सुखवाद का भेद दर्शाया जाता है, वह है- 'सुख' किस प्रकार का है? सुख के गुणात्मक एवं/या परिमाणात्मक भेद के आधार ~~से~~ पर किसी कर्म का नैतिक मूल्यांकन यहाँ होता है।

→ इस दृष्टि से सुखवाद के चार भेद हैं -

(i) निकृष्ट स्वार्थमूलक सुखवाद (Gross Egoistic Hedonism):- स्वार्थ-सुख और किसी प्रकार का सुख (गुणात्मक या परिमाणात्मक दृष्टि से) मानव जीवन का ध्येय होना चाहिये।

Scanned with CamScanner

(ii) ~~उ~~ उत्कृष्ट स्वार्थमूलक सुखवाद (Refined Egoistic Hedonism):- स्वार्थ-सुख या उच्च-कोटि का (अर्थात् गुणात्मक रूप से उत्कृष्ट सुख) मानव जीवन का ध्येय होना चाहिये।

(iii) निकृष्ट परार्थमूलक सुखवाद (या निकृष्ट उपयोगितावाद (Gross Altruistic Hedonism or Gross Utilitarianism) परार्थ-सुख, परन्तु किसी प्रकार का (गुणात्मक अथवा परिमाणात्मक दृष्टि से उत्कृष्ट) सुख मानव जीवन का ध्येय होना चाहिये।

(iv) ~~उत्कृष्ट~~ उत्कृष्ट परार्थमूलक सुखवाद या उत्कृष्ट उपयोगितावाद (Refined Altruistic Hedonism ~~of~~ or Refined Utilitarianism):- परार्थ सुख, परन्तु उच्च कोटि का (अर्थात् गुणात्मक दृष्टि से उच्च) सुख मानव जीवन का ध्येय होना चाहिये।

→ इसके अतिरिक्त सुखवाद के और भी रूप हैं; जैसे - बुद्धिमूलक सुखवाद (Rational Hedonism), ~~विकासवाद~~ विकासात्मक सुखवाद (Evolutionary Hedonism)।

→ ~~'गुणात्मक रूप से उत्कृष्ट' का तात्पर्य~~

→ 'गुणात्मक रूप से उत्कृष्ट सुख' का तात्पर्य है वैसा सुख जो गुणात्मक रूप से अन्य सुख से श्रेष्ठ है। जैसे - किसी ~~को~~ से शरारत कर या उसे परेशान कर सुख प्राप्त करने से बेहतर (गुणात्मक रूप से) ~~क~~ कविता पढ़ने का सुख माना जायेगा।

→ 'परिमाणात्मक रूप से उच्च सुख' का तात्पर्य सुख की मात्रा को लेकर सुख की उत्कृष्टता निर्धारित करने से है। ~~जैसे - भोजन करने का सुख से बेहतर~~ कर्मों का नैतिक मूल्यांकन ~~सुख क~~ उससे प्राप्त सुख की मात्रा को लेकर करना इसका ध्येय है।

क्रमशः

Scanned with CamScanner